के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल 2021 से मार्च 2022
वार्षिक अंक-1 (प्रवेशांक)

संदेश

पी. के. पुजारी
अध्यक्ष

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग अपनी गृह पत्रिका "सौदामिनी" के वार्षिक अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। आप सभी को विदित है कि केविवि आयोग में कई वर्षों से "सौदामिनी" का प्रकाशन न्यूज लैटर के रूप में प्रत्येक तिमाही में होता रहा है। इसी दिशा में केविवि आयोग के न्यूज लैटर को और अधिक व्यापक रूप देते हुए "सौदामिनी" का वार्षिक अंक आपको समर्पित करते हुए मैं असीम प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। इससे न केवल "सौदामिनी" का प्रकाशित रूप अधिक आकर्षित होगा, बल्कि इसमें केविवि आयोग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अधिक से अधिक चयनित स्व–रचित रचनाओं का समावेश हो सकेगा। केवल यही नहीं, इस पत्रिका में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों की चयनित स्व–रचित रचनाओं को भी स्थान दिया गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि गृह–पत्रिका "सौदामिनी" के विषयपरक तथा रुचिपूर्ण सामग्री के प्रकाशन से केविवि आयोग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल परिवेश बनाने हेतु प्रेरणा मिलेगी।

"सौदामिनी" के प्रथम वार्षिक अंक के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संदेश

इंदु शेखर झा
सदस्य

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग द्वारा गृह–पत्रिका ''सौदामिनी'' के वार्षिक अंक का प्रकाशन आरंभ किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से हम आयोग की गतिविधियों की समुचित जानकारी अपने स्टाफ सदस्यों को उपलब्ध करवाते रहें हैं और पत्रिका के वार्षिक अंक के प्रकाशन से इस दिशा में इस कार्य कोऔर अधिक विस्तार मिलेगा। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से हम अपने स्टाफ सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा का पूर्ण उपयोग कर सकेंगे।

इस पत्रिका के वार्षिक अंक के लिए जिन अधिकारियों व कर्मचारियों ने अपनी रचनाएं दी हैं, वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के वार्षिक अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संदेश

अरुण गोयल
सदस्य

हम सभी को ज्ञात है कि किसी भी भाषा का विकास उसके बहुआयामी प्रयोग से ही संभव होता है। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि भाषा के विकास का मानदंड केवल कहानी, कविता या उपन्यास ही नहीं होता अपितु उस भाषा में उपलब्ध वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों से संबंधित सामग्री का स्तर व मात्रा भी होता है। मुझे प्रसन्नता है कि इस पत्रिका में आयोग की समस्त गतिविधियों की सम्यक जानकारी तथा साथ–साथ विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों को सहज–सरल एवं प्रचलित हिंदी भाषा में उपलब्ध करवाया गया है।

पत्रिका के वार्षिक प्रकाशन की सफलता हेतु शुभकामनाएं देते हुए मैं आशा करता हूं कि अपने रोजमर्रा के कार्यों में भी हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने का सभी प्रयत्न करेंगे।

संदेश

प्रवास कुमार सिंह
सदस्य

यह जानकर हर्ष हुआ कि के. वि. वि. आयोग की गृह पत्रिका ''सौदामिनी'' के वार्षिक अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। भारतीय संविधान के भाग XVII अनुच्छेद 343 के अंतर्गत भारतवर्ष की शासकीय भाषा हिंदी है, तथा इसे राजभाषा की मान्यता प्राप्त है। अंग्रेजी को समयावधि के लिए द्वितीयक शासकीय भाषा के रूप में मान्य किया गया है। भारत का संविधान हिंदी के उत्तरोत्तर विस्तार की जिम्मेदारी संविधान के अनुच्छेद 344 में संधारित करता है।

हमें यथा साध्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। गृह पत्रिका ''सौदामिनी'' के वार्षिक अंक के सफल प्रकाशन एवं प्रसार हेतु मेरी शुभकामनाएं।

संदेश

हरप्रीत सिंह प्रुथी
सचिव

राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग एवं इसकी प्रगति के लिए हम सभी प्रतिबद्ध हैं। इस पत्रिका के संपादन में सरल और सहज भाषा का प्रयोग लक्षित कर मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। हम सभी के लिए यह हर्ष और गर्व का अवसर है कि के.वि.वि. आयोग की गृह पत्रिका ''सौदामिनी'' के वार्षिक अंक का प्रकाशित किया जा रहा है। पिछले अंकों के अवलोकन से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि इस पत्रिका में न केवल राजभाषा से संबंधित गतिविधियों का विवरण प्रकाशित किया जाता है बल्कि कार्यालय के अन्य क्षेत्रों की गतिविधियों व उपलब्धियों को भी शामिल किया जाता है।

यह और भी प्रसन्नता की बात है कि अब से पत्रिका का वार्षिक अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इससे केविवि आयोग के स्टाफ सदस्यों की अधिक से अधिक रचनाओं को स्थान दिया जा सकेगा। पत्रिका के वार्षिक अंक हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	खिड़कियों के झरोखों से (कविता)	अतुल अग्रवाल	8
2.	आस्था, कर्म, हौसला (कविता)	अमित श्रीवास्तव	9
3.	मैं आशावादी हूँ। (लेख)	भुवना	10
4.	हिम्मत की खूबी (कविता)	मनजीत सिंह	11
5.	घर से दूर (कविता)	शिवानी अग्रवाल	11
6.	लॉकडाउन के दौरान प्रसारित "रामानंद सागर की रामायण" का एपिसोड (संस्मरण लेख)	मनजीत सिंह	12
7.	ज़िंदगी और रास्ते (कविता)	श्रुति रामकृष्णन पुत्री – श्रीमती भुवना)	13
8.	वो बीते पल (कविता)	अमित श्रीवास्तव	14
9.	राष्ट्र के नैतिक उत्थान में मोबाइल का योगदान (व्यंग्यात्मक लेख)	राजेन्द्र प्रताप सहगल	15
10.	उपभोक्तावाद – मेरा अनुभव और संघर्ष (संस्मरण लेख)	अरविंदर सिंह	20
11.	राजभाषा संबंधी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी		22
12.	केविवि आयोग के माननीय सचिव श्री सनोज कुमार झा को भावभीनी विदाई		24
13.	केविवि आयोग में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन		26

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
मिशन और मार्गदर्शक सिद्धांत

मिशन विवरण

आयोग की थोक विद्युत बाजारों में प्रतिस्पर्धा, कार्यकुशलता और मितव्ययता को बढावा देने, सप्लाई की गुणवत्ता में सुधार करने, मांग आपूर्ति के अंतर, जिससे ग्राहकों के हितों का सम्पोषण हो, को पाटने के लिए संस्थागत बाधाओं को दूर करने के संबंध में सरकार को सलाह दने की योजना है। इन उद्देश्यों के अनुसरण में, आयोग का उद्देश्य–

क. भारतीय विद्युत ग्रिड संहिता (आईईजीसी), उपलब्धता आधारित टैरिफ (एबीटी) के माध्यम से क्षेत्रीय पारेषण प्रणालियों के प्रचालन और प्रबंधन में सुधार करना।

ख. एक कारगर टैरिफ अवधारण तंत्र तैयार करना जिससे थोक विद्युत और पारेषण सेवाओं की कीमत के संबंध में मितव्ययता और कार्यकुशलता और न्यूनतम लागत पर निवेश सुनिश्चित होगा।

ग. अंतर–राज्यिक पारेषण में निर्बाध पहुंच को सुकर बनाना।

घ. अंतर–राज्यिक व्यापार को सुकर बनाना।

ङ विद्युत बाजार के विकास को प्रोत्साहन देना।

च. सभी पणधारियों के लिए जानकारी देने में सुधार लाना।

छ. थोक ऊर्जा तथा पारेषण सेवाओं में प्रतिस्पर्धात्मक बाजार के विकास के लिए अपेक्षित तकनीकी तथा संस्थानिक परिवर्तनों को सुकर बनाना।

ज. प्रतिस्पर्धात्मक बाजारों के सृजन के प्रथम उपाय के रूप में, पर्यावरणीय, सुरक्षा तथा विद्यमान विधायी अपेक्षाओं की सीमा के भीतर पूंजी तथा प्रबंधन के लिए प्रवेश तथा निकासी की बाधाओं के संबंध में सलाह देना।

मार्गदर्शक सिद्धान्त

मिशन विवरण और इसके उद्देश्यों को अग्रसर करने के लिए आयोग का मार्गदर्शन निम्नलिखित सिद्धांतों द्वारा किया जाता है:

क. सभी पणधारियों (स्टेक होल्डरों) के प्रति पारदर्शी और निष्पक्ष रहते हुए उपभोक्ता और आपूर्तिकर्ताओं के हितों सहित समाज के हित का संरक्षण।

ख. पक्षकारों को सुने जाने के पर्याप्त और समान अवसर दिए जाने के पश्चात् याचिकाओं के माध्यम से इसके समक्ष लाए गए विवाद समाधान में निष्पक्ष रहना।

ग. एक ओर विचारों में संगत रहते हुए, विनियामक निश्चितता बनाए रखना और दूसरी ओर उभरते हुए विद्युत क्षेत्र में खुले मन से परिवर्तनों को अंगीकार करना।

घ. यह सुनिश्चित करने के लिए अपने विनियम बनाने में पणधारी परामर्श और भागीदारी प्रक्रिया अपनाना जिससे कि विनियम यथासंभव पणधारियों की आशाओं के अनुरूप हों।

ङ विनियामक और बाजार आधारित तंत्र का प्रयोग करते हुए विद्युत क्षेत्र में स्रोतों का अनुकूल आबंटन सुनिश्चित करना।

च. विद्युत उत्पादन में नवीकरणीय स्रोतों के संवर्धन द्वारा कायम रखने योग्य विकास को प्रोत्साहित करना।

खिड़कियों के झरोखों से

अतुल अग्रवाल 'निष्प्राण'
अनुसंधान अधिकारी

खिड़कियों के झरोखों से
झाँकती है वो,
जब मैं जाता हूँ
फिर मैं पीछे मुड़ कर देखता हूँ
और पाता हूँ
कोई नहीं है वहाँ!

है तो सिर्फ मेरा वहम
या वो यादें;
जब वो थी
तो सच में झाँकती थी
खिड़कियों से
और कहती थी
कि जल्दी आना
और रोटियाँ रखी हैं सेंक कर
उन्हें खा लेना;
रस्ते में कुछ ले लेना!

जब से वो गई है
खिड़कियाँ सूनी हो गयी हैं
बस एक खालीपन है
झरोखों का
जो पुकारता है मुझे!

फिर लगता है जब सचमुच
तुम आ जाओगे एक दिन तो
मैं जाऊँगा ही नहीं
तुम्हारी ही गोद में लेटा रहूँगा
सर रखकर;
आओगी ना
मेरी माँ, लौटकर!

अमित श्रीवास्तव
रिकॉर्ड कीपर

आस्था, कर्म, हौसला

यह जीवन एक गीत, एक छ्न्द है,
जवानी एक अंतरा, बुढ़ापा स्वर मंद है,
आस्था, कर्म, हौसला
ये तीन मूल मंत्र है,
आत्मा ही शक्ति है, शरीर केवल यंत्र है ....
भांति भांति लोग यहॉ,
मानव श्रृंखला स्वछंद है,
तू मूर्त रूप ना रहै,
जीवन पथ चले बढ़े,
साहस शौर्य संग है, पुण्य पंथ कर्म है....
काल पर अधिकार है,
कर्म तेरा हथियार है,
भावनाओं में तरंग है,
स्वच्छ आत्मा रूप रंग है,
गिरने का तुझे डर कहॉ,
हौसला ही पंख है,
इस जीवन के कुरुक्षेत्र का,
तू ही तात,तू ही मदन है....
समय चक्र लड़खड़ाए जो,
उठ फिर एकबार,
साहस तुझमे परिपूर्ण है,
मत सोच राह सरल या कठिन,
पग बढ़ा तू जोश से,
फिर देख स्वप्न सब संग है,
सृष्टि शक्ति सारी तुझमे,
फिर क्यूं सोचता तू अपंग है....

भुवना
कार्यकारी, प्रशासन, विनियामक मंच

मैं आशावादी हूँ।

मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया,
हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया...
साहिर लुधियानवी

इस गीत से हम सब वाक़िफ़ हैं। साहिर लुधियानवीजी के द्वारा लिखित यह गीत मेरे दिल के बहुत क़रीब है। इस गीत के हर शब्द से मैं खुद को जोड़ पाती हूँ। अब जब मैं ज़िंदगी के तीसरे पड़ाव, यानी बुढ़ापे की तरफ बढ़ रही हूं, तो सोचकर हैरानी होती है कि एक दौर था जब कुछ कड़वे अनुभवों के कारण मैं ज़िंदगी से पूरी तरह निराश हो गई थी। मुझे अपनी ज़िंदगी बेमक़सद और हताशापूर्ण लगने लगी थी।

फिर ज़िंदगी ने एक नया मोड़ लिया और मैं एक बार फिर जीने की चाह करने लगी। उम्र की परिपक्वता के साथ धीरे धीरे ज़िंदगी को एक नये नज़रिये से देखने लगी। ज़िंदगी के हर मोड़ पर नये नये अनुभवों की यादें समेटे आज मैं जिस मुकाम पर हूं उससे कुछ बातें जो मैं सीख और समझ पायी वह कुछ यूं हैं –

- वक्त से पहले और किस्मत से ज़्यादा कभी किसी को कुछ हासिल नहीं होता।
- कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
- जो भी ज़िंदगी तुम्हें देती है उसे दिलों–जान से अपनाएं और कभी मन में कोई रंज न रखें।
- अपने आप पर और ऊपर वाले पर कभी विश्वास न खोएं।
- नकारात्मकता से दूर रहें और स्वस्थ एवं प्रसन्नचित रहें।

हम सब से परे जो अदृश्य शक्ति है उस पर भरोसा रखें। ज़िंदगी के अब तक के सफर में कई बार मैंने खुद को ऐसे मोड़ पर पाया जब मुझे लगा कि मैं एक अंधेरी सुरंग में फंस गई हूं। उस अंधकार से निकलने का कोई रास्ता नज़र नहीं आता था। और फिर मुझे उसी अंधेरी सुरंग के मुहाने पर रोशनी की एक छोटी सी किरण नज़र आई जिसने मुझे सुरंग से अंततः बाहर निकलने में मदद की। और एक बार फिर मैं ज़िंदगी की अंधेरी राहों से निकलकर रौशन पथ पर विश्वास के साथ चल पड़ी।

तो दोस्तों जीवन की राहें कितनी ही कठिन और अनिश्चितता से भरी क्यों न हो कहीं न कहीं एक छोटी सी आशा की किरण आपकी राह में अवश्य मिलेगी, जो आपको अंधेरे से दूर रोशनी की ओर ले जाएगी। इस विश्वास के साथ इस खूबसूरत गीत को गुनगुनाते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहिए...

हर घड़ी बदल रही है रूप ज़िंदगी, छाँव है कभी, कभी है धूप ज़िंदगी,

हर पल यहां जी भर जियो, जो है समां कल हो न हो....

मनजीत सिंह
कनिष्ठ हिंदी
अनुवादक

हिम्मत की खूबी

मुश्किलों के शिखर पर,
विजय पताका फहराना है,
हासिल न हो सका जो अब तक,
उसे दो–गुना अब पाना है।

क्या हुआ, क्यूं हुआ, सोचना ये व्यर्थ है,
याद केवल ये रहे, इतना तू समर्थ है।
आपत्तियों की लहर में, आशा की नाव डूबी
नहीं,
मुश्किलों में भी जिता दे,
वो है बस खूबी यही...।

घर से दूर

शिवानी अग्रवाल
अनुजा अतुल अग्रवाल 'निष्प्राण

मन करता है तेरे पास रहूँ
तू रोज कहीं खो जाती है
इन धूप से सिकते जाड़ों में
माँ याद बहुत तू आती है।

कुछ खुद ना ओढ़े बुनती थी
माँ तेरे स्वेटर कहाँ गए
वो सिगड़ी की आँच सी गर्मी के
माँ वैसे जाड़े कहाँ गए।

अब साँझ भोर है एक जैसी
सब कोहरे में खो जाती हैं
इन धूप से सिकते जाड़ों में
माँ याद बहुत तू आती है।

वो खाट बिछाये लेटे थे
माँ वो सिरहाने कहाँ गए
वो कच्चे पक्के सिके हुए
मूँगफली के दाने कहाँ गए।

अब मुटठी भर रेवड़ियों में
सारी सर्दी कट जाती है
इन धूप से सिकते जाड़ों में
घर से दूर ....
माँ याद बहुत तू आती है!!

मनजीत सिंह
कनिष्ठ हिंदी
अनुवादक

लॉकडाउन के दौरान प्रसारित "रामानंद सागर की रामायण" का एपिसोड

वाह! सच में, आज रात 9.00 बजे दूरदर्शन के चैनल पर प्रसारित रामायण का एपिसोड देखकर मैं स्तब्ध रह गया। देखते हुए पता ही नहीं चला कि कब एपिसोड खत्म हो गया और मैं फिर अगले दिन सुबह 9.00 बजे इससे आगे की कथा देखने की फिर से बाट जोहने में लग गया। सोचा अपने दिल में उठे उद्‌गार को लिखकर साझा करूं। न जाने आज के एपिसोड में कुंभकरण का किरदार निभाने वाले कलाकार की एक्टिंग का कमाल था, या फिर सचमुच रावण के छोटे भाई कुंभकरण के धर्म और नीति के ज्ञान का? वैसे तो वह राक्षस कुल में जन्मा एक राक्षस था पर उसके मुख से धर्मपरायणता और नीति की बातें सुनकर मैं हैरान रह गया।

अपने बड़े भाई रावण के बुलाए जाने पर उसके समक्ष होकर भी सर्वप्रथम उसने प्रभु श्री राम का ही गुणगान किया। उसने रावण को श्रीराम के मानव रूप में धरती पर अवतार लेने के पीछे वास्तविक कारणों का बखान भी किया। उसने रावण को समझाया कि श्रीराम और कोई नहीं, बल्कि वास्तव में स्वयं त्रिलोकीनाथ हैं। पर रावण की आंखों के आगे तो अहंकार का काला पर्दा पड़ा था जिसके कारण वह सही गलत के अंतर को, सत्य–स्वरूप श्री राम को देख ही नहीं पाया।

पर कुंभकरण भविष्य में झांककर असत्य और अधर्म की हार और सत्य और धर्म की जीत के रूप में लंका का पतन और रावण का काल देख चुका था। इतना सब जानने के बाद भी कुंभकरण ने अपने दंभी और हठी भाई का साथ नहीं छोड़ा। उसे याद था कि ब्रह्मा के दिए हुए वरदान के अनुसार वह सिर्फ एक दिन ही जागेगा और फिर छह मास की चिर निद्रा में चला जाएगा। और यही वह एक दिन है जब वह अपने बड़े भाई के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए उसकी हठ पर रणभूमि में जा रहा है। वह जानता था कि वह रणभूमि में जा तो रहा है पर आज उसका अंत निश्चित है। और हुआ भी वही, प्रभु श्री राम के हाथों मृत्यु पाकर वह मुक्ति पा गया।

अपनी मृत्यु से पहले अपने छोटे भाई विभीषण के साथ हुई उसकी वार्ता भी देखने लायक है। किस प्रकार उसने विभीषण को सोचने पर मजबूर कर दिया कि अच्छे का साथ तो सभी देते हैं, पर भाई का साथ देने वाले विरले ही होते हैं। मेरे विचार में, एक तरह से रावण का साथ देते हुए भी उसने धर्म और नीति का पालन किया। क्योंकि धर्म और नीति को उसने केवल सत्य और असत्य, सही और गलत के पलड़े में ही नहीं, बल्कि बड़े भाई के प्रति अपने प्रेम और कर्त्तव्य के पलड़े में भी तोला।

कमाल है उस कलाकार की एक्टिंग। कुंभकरण को तो किसी ने नहीं देखा, पर अगर सच में ही ऐसा हुआ जैसा कि रामानंद सागर की रामायण में दिखाया गया, तो फिर से कहूंगा कि आज का रामायण का एपिसोड सच में मार्मिक था जिसने मन में उठ रही भावनाओं को झंझोड़ दिया। वैसे ये मेरे व्यक्तिगत विचार हैं।

ज़िंदगी और रास्ते

श्रुति रामकृष्णन
(पुत्री – श्रीमती भुवना)
कार्यकारी, प्रशासन
विनियामक फोरम

ज़िंदगी की राह पर चलता चल,
कभी थम तो कभी बढ़ता चल।

रास्ते –

कभी अलग, कभी समान;
कभी जोखिम भरे, कभी करे हैरान,
कभी दे ख़ुशी, कभी करे परेशान,
फिर भी ज़िंदगी की राह पर चलता चल,
कभी थम तो कभी बढ़ता चल।

मौके अनेक आएंगे,
कभी रास्ते सीधे,
तो कहीं यह मुड़ भी जाएंगे

मोड़–

कभी रास्ते दिखायेंगे,
कभी रास्तों से भटकायेंगे,
भूले भटके रास्तों का भी अलग है मज़ा,
ये भी कहीं ले कर ही जाएंगे,
नई मंजिल दिखायेंगे,
नया रास्ता सुझायेंगे,
बेफ़जूल, बेवजह ही सही,
पर हैं तो मोड़ रास्ते ही,
तू मोड़ को भी अपनाता चल,

ज़िंदगी की राह पर चलता चल,
कभी थम तो कभी बढ़ता चल।

हर मोड़ की है अपनी मुश्किलें,
हर जगह की अपनी परीक्षा,
हमें धैर्य रखना होगा,
कभी कहीं पर थमना होगा,
थमना भी तो रास्ते का ही हिस्सा है,
थमना साँस की याद दिलाएगा,
वक्त की याद दिलाएगा,
खुद से परिचय कराएगा,
यादों में डुबाएगा।

पर फिर हमें चलना होगा,
चलते रहना होगा।

सब्र रखना मेरे दोस्त,
जब वक्त का पहिया घूमेगा,
रास्ते मंजिल बन जायेंगे,
और मंजिल नया रास्ता।

नये रास्तों, नयी मंजिलों की ओर,
उत्साह से हर कदम रखता चल।

ज़िंदगी की राह पर चलता चल,
कभी थम तो कभी बढ़ता चल।

अमित श्रीवास्तव
रिकॉर्ड कीपर

वो बीते पल

कोई थोड़ी मुझे चाहे तो क्या कहने,
कोई साथी अगर मिल जाए, तो क्या कहने,
आंसूओ को पिरो कर जो लिखी कविता,
सुनने वाले ये दर्द समझ जाए, तो क्या कहने,

मेरे शब्दों को सुन आगर वो याद आए, तो क्या कहने,
वो बीते पल अगर सताएं, तो क्या कहने,
दिखे खुली आँखों मे, ख्वाबो का वो रहबर,
और भींगी पलकों से जब होंठ मुस्कुराए, तो क्या कहने,

जो ख्वाबों मे रह गए, वो हकीकत मे नजर आए, तो क्या कहने,
तेरी धड़कनों को सुन, दिल का हाल बताऊं, तो क्या कहने,
जो छुट गया दो पल साथ चल यूं ही,
वो किसी मोड़ पर हमसफर बन नजर आए, तो क्या कहने,

राष्ट्र के नैतिक उत्थान में मोबाइल का योगदान

राजेन्द्र सहगल
राजभाषा अधिकारी

कब से देशवासी नैतिक उत्थान के लिए तड़प रहे थे पर सब बेकार हुआ जाता था। भला हो मोबाइल के आने का। सब कुछ खुशनुमा नजर आने लगा है। सभी व्यस्त हो गए हैं। आदमी एक हाथ से कार की स्टीयरिंग सँभाले है तो दूसरी हाथ में मोबाइल थामे हुए है। ऑफिस में हर तरफ घंटियाँ बज रही हैं। सड़कों पर लड़के–लड़कियाँ चलते–चलते मोबाइल पर बात कर रहे है। सभी को सभी से काम है। सभी को लगने लगा है वे एकदम जरूरी हो गए है। सभी महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। अभी–अभी घर से ऑफिस या दुकान के लिए निकले है। पहुँचते ही बता रहे हैं, "मै पहुँच गया हूँ। फिक्र मत करना।" दूसरे को फिक्र हो न हो जबरदस्ती फिक्र पैदा की जा रही है। सभी की गतिविधियाँ इतिहास में दर्ज होने लगी हैं। आधे–आधे घंटे बाद अपने सकुशल होने की खबर दी जा रही है। गाड़ी में सवार यात्री हर स्टेशन पर पहुँचकर बता रहा है कि अब गाड़ी इस स्टेशन पर पहुँच गई है।

कॉलेज के लड़के–लड़कियाँ को प्यार करने में आसानी हो गई है। जिसके पास मोबाइल नहीं उसकी जिंदगी में प्यार नहीं उतर रहा। प्यार करने के लिए मोबाइल पहली जरूरत है। अब मान लो प्रेमिका को एक खास वक्त लगे कि उसे अपने प्रेमी को 'आई लव यू' कहना है और प्रेमी महोदय के पास सेलफोन नहीं तो हो गया न प्यार खत्म। यह मोबाइल ही है जो प्यार को बचाए रखता है। दूसरे से मिलकर विदा होने वाला अपनी बात मिलते वक्त पूरी नहीं करता। वह चलते–चलते बता रहा है कि बाकी बात फोन पर कर लेंगे। वो वक्त दूर नहीं जब इस बात का विशेष तौर पर उल्लेख किया जाएगा कि फलाँ–फलाँ से उन्होंने आमने–सामने बात की।

पति–पत्नी में एकाएक प्यार हिलारे लेने लगा है। कल तक जो पति–पत्नी पास बैठकर भी एक–दूसरे से बात करना वक्त की बर्बादी समझते थे अब हर दो घंटे बाद कुशलता पूछने के लिए या घर में दाल–सब्जी बनाने से पहले पूछताछ करने लगे हैं। नौकरानी मालकिन को काम पर न आने की सूचना अपने मोबाइल से दे रही है। सड़क पर झाड़ू देने वाले की कमर में भी मोबाइल लगा है। झाड़–बुहार करने वाली हर घंटे माथे पर उभरे पसीने पोंछती हुई मोबाइल की धूल को भी साफ कर लेती है। सब एक–दूसरे के करीब आ गए हैं। भेदभाव, ऊँच–नीच सब मिटता जा रहा है। सभी को अपना महत्व पता लगने लगा है। लगता है जिंदगी में अब कुछ कर गुजरेंगे। सभी ने वक्त को हाथ में कसकर पकड़ लिया है। संवाद वही जो फोन पर हो। आमने–सामने बात करना पिछड़ापन है। सेल पर बात करना एडवांसमेंट है। जमाने के साथ कदम मिलाकर चलना है।

मोबाइल पर प्यार करना आसान हो गया है। जिसे प्यार करना हो तो फौरन मोबाइल ले लो। या मोबाइल ले ले तो प्यार की रजिस्ट्रेशन–बुकिंग अपने आप हो जाएगी। अब आदमी प्यार कर बैठे और बाद में मोबाइल होने की वजह से संदेश न भेज सके तो हो गया न प्यार का गुड़ गोबर। दिन में दस बार 'आई लव यू' करना है तो हर बार पार्क में या रेस्तराँ में कैसे मिला जा सकता है। ऐसे में यह 'सेल' ही काम आता है। दूसरे फोन किसी काम के नहीं। सरकारी विभाग प्रेमिका की कोमल भावनाओं को क्या समझे। मान लो अभी प्यार की इजहार को मूड जगा है और फोन नहीं मिला तो हो गई न प्यार की ऐसी–तैसी। प्यार की कोमल भावना छुई–मुई है। थोड़ी–सी अड़चन या उपेक्षा कैसे बरदाश्त कर सकती हैं यही मोबाइल चाचा गालिब के जमाने में आ जाता तो उस बेचारे को इतनी शेरो–शायरी तो न करती पड़ती। सीधे फोन पर संपर्क साध लेते और दिले नादान की पूरी दास्तां तफसील में बयाँ कर लेते।

अब प्रेमियों को न तो आहें भरने की जरूरत हैं न ही शेरो–शायरी की। अब तो फोन लगाओं और बिना किसी झिझक के प्रपोज कर दो। दो–तीन बार मना कर दे तो हतोत्साहित न हों। लगे रहो। हो सकता है बार–बार फोन पर आ रहे प्रस्ताव से खीजकर ही स्वीकृति दे दे। असली बात काम साधना है। वैसे भी प्यार और जंग में सब ज़ायज़ होता है।

लोग जल्दी प्यार होने से उसके जल्दी टूटने की बात करते हैं। भैया मोबाइल प्रेम है यानी चलता प्रेम है तो चलते तरीके से ही तो होगा। स्थायित्व, ठहराव में ऊब है। बदलाव में नवीनता है। पुरानी आशिकी बासी कढ़ी है। बासी कढ़ी में उबाल लाना। अब फास्ट फूड का जमाना है। सब कुछ क्विक रेडिमेड। चार जुमले लिखे प्यार के लिए और फुल प्यार तैयार। बस में घंटियाँ बज रही हैं। हर कोई फोन पर व्यस्त है। कोई फोन वाले को फोन पर व्यस्त देखने में व्यस्त है। सूचनाओं का आदान–प्रदान जारी है। मिनट–दर–मिनट खबर दी जा रही है।

'सेल' फोन से हम हीनता की ग्रंथि में मुक्त हुए हैं। सभी को साथी मिल गया है। एक–दूसरे से मिलकर बात कम करें फोन पर ज्यादा करें। फोन पर आम बात भी खास लगती है। उसमें करेंट दौड़ जाता है। घर से ठीक–ठीक निकला आदमी ऑफिस पहुँचकर अपने पहुँचने की खबर दे रहा है। सब एकाएक एक–दूसरे के करीब हो गए हैं। मोबाइल हाथ में आते ही प्यार होने लगता है और इसी तरह प्यार होते–होते मोबाइल हाथ में आ जाता है।

मैंने भी मोबाइल खरीदा है। स्विच ऑन किए बैठा हूँ। कोई फोन नहीं आ रहा। बीच–बीच में चैक कर लेता हूँ। कहीं कोई गलत बटन तो नहीं दबा बैठा। मेरे पास ही दो प्रापर्टी डीलर और दो युवा लड़के बैठे है। उन्हें धड़ाधड़ फोन आ रहे हैं। दीवाली की शुभकामनाएं आ रही हैं। ठीक है जो हमारा शुभ कर पाए उसे ही तो शुभकामनाएँ दी जानी चाहिए। जो न कुछ दे सके, न फायदा कर सके उसका क्या शुभ और उसकी क्या शुभकामनाएं।

मैंने कुछ दोस्तों को निदेश दिए हैं कि फोन मोबाइल पर ही करना। ऑफिस का फोन ध्यान आकर्षित नहीं करता। मोबाइल फोन ध्यान खींचता है। जब तक मोबाइल दूसरे का ध्यान न बाँटे तब तक

फोन का क्या मतलब। जिंदगी में इतना कुछ करना है पर जिंदगी मुई छोटी है। देश का विकास इतनी आसानी से नहीं होता। अपनी और दूसरे की जिंदगी दाँव पर लगनी होती है। व्यस्तता का यह आलम है कि आदमी सड़क पर चलते–चलते फोन कर रहा है। पता नहीं कौन लोग हैं जो कहते हैं भारत अमेरिका का मुकाबला नहीं कर सकता।

मोबाइल रखने वाला हर आदमी खुद फोन को टालता है और दूसरे के फोन का इंतजार करता है। अपने हालचाल मोबाइल पर खुद बताने पड़ते हैं पर सरकारी फोन पर एक दिन में कई बार पूरे सिलसिलेवार फोन से सुने सुनाए जाते हैं। मोबाइल फोन प्यार की शुरुआत करता है तो सरकारी फोन प्यार को परवान चढ़ाता है। पास में लगातार घंटियाँ बज रही हैं। कभी–कभी इतनी घंटियाँ एकसाथ बज जाती हैं कि दूसरे की घंटी अपनी समझ आदमी जेब में हाथ डाल बैठता है। फिर असलियत समझ खिसिया जाता है। मोबाइल से आदमी ग्लोबल हो गया है। एक–दूसरे से आमने–सामने बात करना आब पिछड़ापन हो गया है। ठीक उसी तरह जैसे कंप्यूटर के बजाय हाथ से लिखना पिछड़ापन हो गया है। मोबाइल से गुजरकर आवाज ज्यादा मधुर हो जाती है।

कोई सुंदरी आपके पास बैठकर किसी दूसरे से मोबाइल पर बात कर रही हो तो सचमुच बड़ा अपमान लगता है। हम सशरीर उसके साथ बैठे हैं और वो हवा में बात कर रही हैं। यह तो कोई मनुष्यता नहीं हैं। सीधे–सीधे तिरस्कार लगता है। चलो हमसे बात न करो पर उपेक्षा भी तो मत करो। कमबख़्त मोबाइल न होता तो दो–चार बार नज़र मिलने को कौन रोक सकता था। आगे का आपकी हिम्मत पर निर्भर करता है।

पहले पड़ोसी को टी.वी. ने छीन लिया था। अब मोबाइल ने साथ बैठे आदमी को साथ ही छीन लिया है। जिसे देखो बिज़ी है। कहने का टाइम आता था तब तक सारा उत्साह ठंडा पड़ जाता था। जब जैसे ही प्यार की गर्मी का बुखार चढ़ा फौरन मोबाइल के जरिए कह दिया। मामला टालने से टल जाता है। अच्छा है उसे अभी के अभी तय कर दो। मुँह से कहने की हिम्मत नहीं पड़ती तो मैसेज भेज दो। बने बनाए मैसेज उपलब्ध हैं। प्रेम–पत्र लिखने के लिए पहले बड़ा झंझट था। उसे आदमी अलमारी में शादी के बाद कपड़ों के नीचे छिपा कर रखता था। यह प्रेम–पत्र कपड़े ढूँढ़ते वक्त जरूर मिलते थे जिसे लापरवाही से खोलकर बाद में हीराइन को प्यार करने वाला पति पढ़कर हैरान हो जाता और पतिव्रता समझी जाने वाली बीवी को छोड़ने तक की हद तक नाराज हो जाता था। अब तो जितने चाहे प्रेम करो। पकड़े जाने का कोई चक्कर नहीं है। पहले तो एक प्यार से पूरी जिंदगी निकल जाती थी। लेकिन अब तो एक दिन में कई प्यार करने की सुविधा है। मोबाइल का सबसे ज्यादा फायदा 'भाई' लोगों को हुआ है। दूसरे को टपकाने का काम मिनट–मिनट में बदलता रहता है। मोबाइल की बड़ी सुविधा है। सारा काम साफ बेदाग।

पता नहीं किन लोगों ने हवा उड़ा दी है कि हम हिंदुस्तानी तरक्की पसंद नहीं। हम पुरानी सड़ी–गली बातों से चिपके रहना चाहते हैं। मेरी राय है कि अब कोई ऐसी–वैसी बात कहता नजर आए तो उसे मोबाइल कथा के जरिए, अपनी बात साबित करवा सकते हैं। सच तो यह कि हम उस तकनीक

तक को हँसी–खुशी और गर्व के साथ गले लगाने को तैयार हो जाते हैं जिसे दूसरों ने नुकसानदेह कहकर अपने से दूर कर लिया है।

आज हमें देखों हमारे यहां हर दूसरे आदमी के पास मोबाइल है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि हम उस मोबाइल का इस्तेमाल किन कामों के लिए कर रहे हैं। मोबाइल मोबाइल है। हम चलते है तो यह भी चलता है। चूँकि चलने का नाम जिंदगी है इसलिए मोबाइल का नाम जिंदगी है।

मोबाइल के यूँ तो बड़े फायदे हैं पर कुछ फायदे मेरी नजर में आए हैं उन्हें गिना रहा हूँ

–पति–पत्नी का रिश्ता चूँकि जन्म–जन्मांतर का होता है इसलिए मोबाइल के जरिए उनका पल–प्रतिपल का हिसाब बड़ी आसानी से रखा जा सकता है। पत्नी को अपने पति की गतिविधियाँ जानने के लिए उसका पीछा करने के बजाय उसका मोबाइल चैक करते रहना चाहिए।

–जब पति ऑफिस में हो और पत्नी को सब्जी–दाल–चपाती वगैरह के बारे में जानकारी लेनी हो तो मोबाइल की उपयोगिता स्वतः सिद्ध होने लगती है।

–मोबाइल से स्मगलरों का जो फायदा हुआ है उसका तो अंदाजा ही नहीं लगाया जा सकता। मिनट–मिनट की खबर रखनी पड़ती है। मोबाइल ने स्मगलिंग, चोरी–चकारी, खून–खराबे को बड़ा वैज्ञानिक और तार्किक आधार प्रदान किया है।

–एक बार मैंने देखा बस में काफी भीड़ थी और दो सहेलियाँ एक–दूसरे से बात नहीं कर सकती थी लिहाजा दोनों अपने–अपने मोबाइल के जरिए बात की।

–मोबाइल पास होने से हमें एक–दूसरे के पास होने की कतई जरूरत नहीं। आदमी पास–पास हो जाए तो दूरियाँ बढ़ने का खतरा बढ़ता है। मोबाइल ऐसे सारी समस्याएँ हल कर देता है। वह पास आकर भी पास नहीं आने देता।

–मोबाइल हमें हीनता की ग्रंथि से छुटकारा दिलाता है। हर कोई अपने पारिवारिक सदस्य या दोस्त को अपने बारे में मिनट दर मिनट की खबर देता है।

–प्रेमी–प्रेमिका के आत्मीय रिश्तों में मोबाइल ने क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा कर दिया है। इससे प्यार का इजहार करने में आसानी होती है। मोबाइल से बोलते प्रेमी की आँखों के भाव पढ़ने का कोई झंझट नहीं रहता।

जिंदगी मोबाइल है या मोबाइल जिंदगी यह तय करना मुश्किल है। बस मोबाइल है तो जिंदगी है और जिंदगी है तो मोबाइल है। दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं। कुछ अति–व्यस्त टॉयलट में भी मोबाइल ले जाते हैं। टॉयलेट जाने का मतलब जरूरी कामकाज से छुटकारा पाना थोड़े ही होता है। हो सकता है मोबाइल की घंटी से 'प्रेशर' पहले से ज्यादा ठीक हो जाए।

अब आपस में मिल–बैठकर बात करने की किसी के पास दो मिनट की फुरसत नहीं पर वहीं बात मोबाइल पर घंटों कर सकते हैं। किसी को किसी के घर चक्कर नहीं लगाने पड़ते। बस 'मिसकॉल' कर दो। बिना कहे–सुने दूसरा सब कुछ समझ जाएगा। सच तो यह है कि जो काम हमारी पंचवर्षीय योजनाएँ या विकास कार्यक्रम नहीं कर सके थे वे सब इस मोबाइल क्रांति से संपन्न हो गया हैं। अब देश के विकास पर टीका–टिप्पणी करने वालों के मुँह बंद हो जाएँगे।

जैसे आज अंदाजा लगाना मुश्किल है कि टी.वी. न होता तो लोग अपना वक्त कैसे बिताते। ठीक उसकी तरफ मोबाइल के आने से एक बात साफ हो गई है कि इससे हर आदमी को अपनी हैसियत का पता चल चुका है। मोची के पास जूते ले जाइए। वह फौरन बना नहीं देगा। आप थोड़ा झिकझिक करने लगे तो फौरन कह देगा आराम से घर जाएँ। अपना मोबाइल नंबर आपको लिखने के लिए देते हुए कहेगा कि फोन करके जूते लेने आ जाना।

अब जब हम तक यह मोबाइल पहुँचा तक तक इसका बुखार उतर रहा है। इसके फायदे कम नुकसान ज्यादा नगर जाने लगे थे। जो चीज ज्यादा लोगों के पास आ जाए वह कितनी भी उपयोगी हो सस्ती और बेकार नजर आने लगती हैं। अब जिनके पास मोबाइल नहीं उनका स्टेट्स बढ़ गया है। हमारी तो हर हालत में दुर्गत ही रहनी है। पहले न होने से पिछड़े थे। अब होने से पिछड़े हैं। कोई बताएगा हमारी हालत किस तरह दुरुस्त होगी।

अरविंदर सिंह
प्रशासनिक अधिकारी,
केविविआ

उपभोक्तावाद – मेरा अनुभव और संघर्ष

पहला प्यार हमेशा पहला ही होता है। भारत सरकार के भूतपूर्व नागरिक आपूर्ति विभाग (वर्तमान में उपभोक्ता मामले विभाग) में सर्वप्रथम कार्यरत होने से और जन शिकायतों का समाधान करने में सक्षम होने के कारण ''उपभोक्तावाद'' का विषय मेरे हृदय के समीप है। मैं अपने अनुभव और संघर्ष (यदि मैं ऐसा कह सकता हूँ तो) को साझा करना चाहता हूँ।

मैं फोन पर शिकायतों के अलावा जन शिकायतों को प्राप्त करने के लिए नियंत्रण कक्ष में तैनात था। कुछ व्यक्तियों ने मुझे फोन किया और कहा कि यह बिल्कुल व्यर्थ है और इससे कोई भी लाभप्रद उद्देश्य प्राप्त नहीं हो रहा है। अधिकतर शिकायतें गैस सिलेंडरों के कम भार से जुड़ी थीं। हमने इस मामले को संबंधित राज्य सरकारों तक उठाया और अक्सर सामान्य जवाब मिलता कि संबंधित डीलर के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई की गई है। मैं संतुष्ट नहीं था। एक दिन मैंने अपने अधिकारी के साथ इस मामले पर चर्चा की और हमने इन शिकायतों को संबंधित राज्य सरकारों के अतिरिक्त संबंधित पैट्रोलियम कंपनियों को भी भेजने का निर्णय लिया। अब वो परिणाम मिला जिसकी हमें प्रतीक्षा थी। पैट्रोलियम कंपनियों ने व्यक्तिगत रूप से शिकायतों की जांच की और अगली आपूर्ति में संबंधित उपभोक्ता को छूट दी।

नई दिल्ली के एनडीएमसी क्षेत्र में कुछ कीमत प्रदर्शन पद्धति पर संसदीय प्रश्न था। हमने मामले को दिल्ली सरकार और एनडीएम तक उठाया पर कोई भी उचित सूचना नहीं मिली। मेरे संयुक्त सचिव ने बाजार सर्वेक्षण का निर्णय लिया और मुझे एक प्रश्नावली के साथ नियुक्त किया। संसद में मेरे द्वारा बाजार सर्वेक्षण के आधार पर उत्तर दिया गया। मुझे अत्यंत संतुष्टि और गर्व का अनुभव हुआ।

वजन और माप विंग में मेरी तैनाती के दौरान, हमें पैट्रोलियम डीलर एसोसिएशन से शिकायत प्राप्त हुई जिन्होंने मापांकन के मुद्दे को उठाया। एक बैठक में उनके द्वारा इस मुद्दे को यह बताते हुए फिर से उठाया गया कि पैट्रोल और डीजल का मापांकन 5–लीटर उपकरण के साथ किया जाता है। जब बसों और ट्रकों का डीजल टैंक गति के साथ भरा जाता है, तो आपूर्ति मीटर में प्रदर्शित आपूर्ति से अधिक होती है। वे मामले का समाधान करना चाहते थे। बाद में, आंतरिक चर्चाओं में, मैंने यह कहते हुए समान मुद्दा उठाया कि यदि उनका विवाद सही है, तो इसका अर्थ है कि जो ग्राहक एक या दो लीटर तेल खरीदते हैं, उनके टू या थ्री व्हीलरों में डाला गया पैट्रोल कम मात्रा में होगा। मेरे तर्क पर विचार किया गया और

दिल्ली सरकार को टू और थ्री व्हीलरों के लिए अलग से पंप लगाने और उन्हें एक लीटर उपकरण के साथ जांचने के लिए कहा गया।

हमें जर्मनी से कुछ विशिष्ट विशेषताओं वाला उपकरण प्राप्त हुआ। इस उपकरण से कुछ फॉर्मूलों की सहायता से बिना खोले किसी भी कंटेनर में लिक्विड का मापन किया जा सकता था। यह निर्णय लिया गया कि भारत में दिल्ली, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में एक–साप्ताहिक सेमिनार आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में इस सम्मेलन में भाग लेने के अलावा, मैं सहभागियों के यातायात, भोजन इत्यादि जैसी समुचित व्यवस्थाएं करने में शामिल था। मैंने इसे प्रभावी रूप से संचालित किया और मेरे उच्चाधिकारी ने मुझे विशेष तौर पर हैदराबाद जाकर व्यवस्थाओं की निगरानी करने और सहायता देने को कहा, यदि आवश्यक हो।

कई वर्ष पहले, मेरे छोटे भाई उस स्थानीय डीलर के पास चाय खरीदने पहुंचे जिससे वे नियमित रूप से किराने का सामान खरीदा करते थे। पैकेट पर अधिकतम खुदरा मूल्य (स्थानीय कर अतिरिक्त) इंगित था। दुकान मालिक के कर्मचारी ने अत्याधिक कीमत मांगी। मेरे भाई ने ध्यान दिया कि पैकेट पर इंगित अधिकतम खुदरा मूल्य से दोगुना मूल्य मांगा गया था। किसी भी स्थिति में, अधिकतम खुदरा मूल्य के बराबर या इससे अधिक कर नहीं हो सकता था। मेरे भाई ने इसकी रसीद मांगी और उन्हें वह दी गई। हमने शिकायत दर्ज की और डीलर पर भारी जुर्माना लगाया गया। पूरे बाजार को शिकायत और शिकायतकर्ता के बारे में पता चला और कुछ वर्षों के लिए उसने मेरे भाई से कोई कर नहीं लिया।

हम सभी विभिन्न इलेक्ट्रिकल/इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उपयोग करते हैं। इनमें के कुछ वारंटी/वार्षिक रखरखाव संविदा में कवर होते हैं और कुछ नहीं। जब कोई उपकरण ठीक से कार्य नहीं करता है, तो हम आमतौर पर इस ठीक करवाने के लिए कंपनी को फोन करते हैं। मेरा अनुभव रहा है कि ये कर्मी, चाहे वे कंपनी के कर्मचारी हों या न हों, वे उपकरण से असली पार्ट निकालने की कोशिश करते हैं। मेरा सुझाव है कि ऐसी किसी भी स्थिति में, रिपेयर कार्य परिवार के सदस्य की उपस्थिति में होना चाहिए ताकि वे असली पार्ट न निकाल सकें। दूसरा, जब कोई उपकरण वारंटी या वार्षिक रखरखाव संविदा में कवर नहीं होता है, तो मैकेनिक आपके सामने ऐसा प्रस्ताव रखेगा कि यदि कार्य कंपनी के मानकों के अनुसार किया जाएगा, तो प्रभार काफी अधिक होंगे और वो ये कार्य कम कीमत पर कर सकता है। यदि आप उस प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं, तो यह आवश्यक नहीं है कि उपयोग किया गया पार्ट असली ही हो। दूसरी स्थिति में वह कंपनी से पार्ट चुरा कर आपके उपकरण के पार्ट बदल सकता है।

उपभोक्ता कोई भी व्यक्ति हो सकता है। हमें अपने अधिकारों के बारे में सावधान एवं जागरुक रहना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारा शोषण नहीं हुआ है।

★ राजभाषा संबंधी कुछ महत्वपूर्ण जानकारी ★

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत हिंदी और अंग्रेजी दोनों में जारी किए जाने वाले कागजातः–

1.	संकल्प	Resolution
2.	साधारण आदेश	General Orders
3.	नियम	Rule
4.	अधिसूचना	Notifications
5.	प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट	Administrative and other Reports
6.	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Communiques
7.	संविदाएं	Contracts
8.	करार	Agreements
9.	अनुज्ञप्तियां	Licenses
10.	अनुज्ञापत्र	Permits
11.	सूचनाएं	Notices
12.	निविदा प्रपत्र	Tender Forms
13.	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
14.	संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले कागजात	Papers to be places before both the Houses of Parliament

कार्यालय के दैनिक कार्यों में उपयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण अंग्रेजी शब्दों के हिंदी अर्थः–

Admissible	अनुज्ञेय
Allowed	अनुज्ञात
Calculation	परिकलन
Computation	संगणना
Entity	इकाई / कंपनी
Funded	निधिक
Parameter	मानदंड
Imitation/Simulation	अनुकरण
Liabilities	देयताएं
Log book	कार्यपंजी, लॉग बुक
Norms	मानक
Pursuance	अनुसरण
Referred	निर्दिष्ट
Review	समीक्षा
Revision	पुनरीक्षण

Scrap Value	अवशिष्ट मूल्य
Specified	विनिर्दिष्ट
Standing order	स्थायी आदेश
Succeeding	अनुवर्ती
Written off	बट्टे खाते डालना

कार्यालय के दैनिक कार्यों में उपयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण पदबंधः–

Above cited	ऊपर दिया गया/ऊपर उद्धृत
Approved as proposed/suggested	प्रस्ताव के अनुसार अनुमोदित
As directed	निदेशानुसार
By virtue of	के नाते/की हैसियत से
Carry forward	आगे ले जाना
Copy enclosed for ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न
Draft approved as amended	यथासंशोधित मसौदा अनुमोदित
Enclosure to the letter	पत्र का अनुलग्नक/संलग्नक
Follow-up action	अनुवर्ती कार्रवाई
For perusal	अवलोकनार्थ
Immediate action	अविलंब/तत्काल कार्रवाई
In accordance with	————————— के अनुसार
In compliance with	का पालन करते हुए/के अनुपालन में
Laid down in	में निर्धारित/निर्दिष्ट
May be disposed of	का निपटान किया जाए
No objection Certificate	अनापत्ति प्रमाणपत्र
Paper under consideration	विचाराधीन कागजात
Sanctioning authority	स्वीकृतिदाता प्राधिकारी
Subsequent action	परवर्ती कार्रवाई
Through proper channel	उचित माध्यम से

केविवि आयोग के माननीय सचिव श्री सनोज कुमार झा को भावभीनी विदाई

दिनांक 11 मार्च, 2022 को केविवि आयोग के माननीय सचिव श्री सनोज कुमार झा की प्रतिनियुक्ति का कार्यकाल समाप्त होने पर केविवि आयोग के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की ओर से उन्हें भावभीनी विदाई देने हेतु विदाई समारोह का आयोजन किया गया। श्री सनोज कुमार झा ने दिनांक 03 अप्रैल, 2017 को केविवि आयोग में सचिव के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

श्री सनोज ने अपने कार्यकाल के दौरान कठिन परिश्रम, योग्यता और निष्ठा से आयोग को एक सफल और प्रभावी संगठन बनाने में योगदान दिया। आप अपने सौहार्दपूर्ण एवं मृदुभाषी चरित्र से आयोग के सभी उच्च अधिकारियों एवं सभी कर्मचारियों के बीच प्रसिद्ध रहे।

समारोह के आरंभ में सर्वप्रथम श्री सनोज का पुष्प गुच्छ द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात् केविवि आयोग के माननीय अध्यक्ष महोदय तथा माननीय सदस्यों ने बारी–बारी से श्री सनोज के साथ उनके कार्यकाल के दौरान अपने अनुभवों को सभी के साथ साझा किया। आयोग के कई अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी अपने कार्यकाल के दौरान श्री सनोज के अधीन प्राप्त अनुभवों और कुछ मीठी यादों को सभी के साथ साझा किया। उन्होंने बताया कि श्री सनोज के अधीन कार्य करना निःसंदेह ही अविस्मरणीय रहा। श्री सनोज ने कहा कि केविवि आयोग में सचिव पद पर कार्य करना उनके जीवन के संपूर्ण कार्यकाल के विशेष अनुभवों में से एक है और यह उन्हें सदैव स्मरणीय रहेगा।

कार्यक्रम के अंत में श्री सनोज ने माननीय अध्यक्ष महोदय एवं माननीय सदस्यों को धन्यवाद दिया और केविवि आयोग में अपने अनुभवों से सभी को अवगत कराया। श्री सनोज ने कोरोना काल के दौरान प्रशासन के साथ कंधा से कंधा मिलाकर काम करने के लिए केविवि आयोग के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रशंसा की और उन्हें भविष्य में और अधिक निष्ठापूर्वक होकर कार्य करने हेतु प्रेरित किया।

अंत में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने श्री सनोज को उनके भावी कृत्यों एवं उत्तरदायित्वों के लिए शुभकामनाएं और उनके अच्छे स्वास्थ्य की मंगलकामना करते हुए उन्हें भावभीनी विदाई दी।

कुछ झलकियां

केविवि आयोग में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

केविवि आयोग में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से दिनांक 01.09.2021 से 14.09. 2021 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। पखवाड़े के दौरान, आयोग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रूचि एवं उत्साह जागृत करने हेतु हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध प्रतियोगिता, हिंदी में टिप्पण प्रारूपण एवं अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के ज्ञान, और गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साथ ही, विभागीय प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष के दौरान हिंदी में सराहनीय शासकीय कार्य करने वाले 12 कार्मिकों का भी चयन किया गया।

सभी प्रतियोगिताओं में केविवि आयोग के सभी स्तर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर सहभागिता की।

उक्त दोनों प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा विभागीय प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चयनित 12 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया। सभी पुरस्कृत विजेताओं एवं चयनित कार्मिकों का विवरण निम्नानुसार है:–

निबंध प्रतियोगिता – दिनांक 07.09.2021					
क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	पुरस्कार	पुरस्कार की राशि (₹)
1.	श्री अमित कुमार	अभिलेखपाल	प्रशासन	प्रथम	2000/–
2.	सुश्री अनिशा श्रीवास्तव	अनुसंधान सहायक	विधि	द्वितीय	1500/–
3.	श्री बाबुल झा	कनिष्ठ कार्यकारी	विधि	तृतीय	1000/–
4.	श्री मोहन पासवान	सुरक्षा प्रहरी	सुरक्षा	तृतीय	1000/–
5.	सुश्री जिज्ञासा बेहेरा	अनुसंधान सहायक	वित्त	हिंदीतर भाषी	1500/–

हिंदी में टिप्पण प्रारूपण एवं अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद ज्ञान प्रतियोगिता – दिनांक 09.09.2021					
क्र. सं.	नाम	पदनाम	विभाग	पुरस्कार	पुरस्कार की राशि (₹)
1.	श्री अतुल अग्रवाल	अनुसंधान अधिकारी	अर्थशास्त्र	प्रथम	2000/–
2.	श्री जितेन्द्र कुमार	सहायक	प्रशासन	प्रथम	2000/–
3.	श्री अरविंद सिंह रौथाण	प्रशासनिक कार्यकारी	वि. मामले	द्वितीय	1500/–
4.	श्री किशन सिंह	कनिष्ठ कार्यकारी	अर्थशास्त्र	तृतीय	1000/–
5.	सुश्री जिज्ञासा बेहेरा	अनुसंधान सहायक	वित्त	हिंदीतर भाषी	1500/–

गीत गायन प्रतियोगिता – दिनांक 14.09.2021					
क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	पुरस्कार	पुरस्कार की राशि (₹)
1.	श्री योगेश	पैन्ट्री बॉय	पैन्ट्री	प्रथम	2000/–
2.	श्री समीर महानी	अनसंधान सहायक	वित्त	द्वितीय	1500/–
3.	श्री सुशील कुमार अरोड़ा	प्रशासनिक अधिकारी	वि. मामले	तृतीय	1000/–
4.	श्री जतिन महानी	अनुसंधान अधिकारी	इंजीनियरिंग	तृतीय	1000/–
5.	सुश्री भुवना	सहायक	एफओआर	हिंदीतर भाषी	1500/–

हिंदी में सराहनीय शासकीय कार्य करने वाले 12 कार्मिकों को पुरस्कार				
क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	पुरस्कार की राशि (₹)
1.	श्री हेमंत कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	लेखा	2500/–
2.	श्री विनोद कुमार झा	सहायक अनुभाग अधिकारी	प्रशासन	2500/–
3.	श्री अरविंदर सिंह	प्रशासनिक अधिकारी	प्रशासन	2500/–
4.	श्री अरविंद सिंह रौथाण	प्रशासनिक कार्यकारी	वि. मामले	2500/–
5.	श्री जे. के. तिवारी	कार्यकारी	प्रशासन	2500/–
6.	श्री किशन रावत	कनिष्ठ कार्यकारी	अर्थशास्त्र	2500/–
7.	श्री अमित कुमार	अभिलेखपाल	प्रशासन	2500/–
8.	सुश्री संगीत रश्मि	पुस्तकाध्यक्ष	पुस्तकालय	2500/–
9.	श्री राजेन्द्र कुमार	हिंदी टंकक	राजभाषा कक्ष	2500/–
10.	श्री मनमोहन	एमटीएस	प्रशासन	2500/–
11.	श्री सुदीप नंदी	आरसीटीओ	प्रशासन	2500/–
12.	श्री लखन राजपूत	संदेश वाहक	लेखा	2500/–

हिंदी पखवाड़ा - 2021 (दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021) की कुछ झलकियां-

हिंदी निबंध प्रतियोगिता (दिनांक 07.09.2021)

हिंदी में टिप्पण प्रारूपण एवं अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद ज्ञान प्रतियोगिता (दिनांक 09.09.2021)

गीत गायन प्रतियोगिता (दिनांक 14.09.2021)

हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2021 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सचिव महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण करते हुए कुछ झलकियां

हिंदी पखव
श्रुतलेख प्रतियोगि
01 सितम्बर, 202

संपादक मंडल
हरप्रीत सिंह प्रुथी, सचिव
सचिन कुमार, सहायक सचिव (का. एवं प्रशा.)
राजेन्द्र सहगल, राजभाषा अधिकारी
मनजीत सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कृपया अपनी प्रतिक्रिया निम्नलिखित पते पर भेजें:

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
भूतल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ,
नई दिल्ली – 110 001
ईमेलः **info@cercind.gov.in**
www.cercind.gov.in

Aggarwal Printing & Trading 9810118199